

यूपी में कृषि अवशेषों से बनेगा विमान ईंधन

हरित ऊर्जा में निवेश बढ़ाने और किसानों की आय के नए स्रोत विकसित करने पर जोर

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में कृषि अवशेषों और जैविक कच्चे माल से सतत विमानन ईंधन (एसएएफ) बनाने वाली औद्योगिक इकाइयां स्थापित करने का रास्ता साफ हो गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में उत्तर प्रदेश सतत विमानन ईंधन विनिर्माण प्रोत्साहन नीति-2026 को मंजूरी दी गई। इसका उद्देश्य प्रदेश में हरित ऊर्जा के क्षेत्र में निवेश आकर्षित करना और कृषि अवशेषों के लिए नया बाजार विकसित करना है।

एसएएफ ऐसा वैकल्पिक विमानन ईंधन है, जिसका इस्तेमाल मीजूदा विमानों में पारंपरिक विमानन ईंधन के साथ किया जा सकता है। इसके उत्पादन से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 80 प्रतिशत तक कमी लाने की क्षमता है। साथ ही जीवाश्म ईंधन के आयात पर निर्भरता घटाने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने की संभावना है। प्रदेश में एसएएफ उत्पादन के लिए गन्ने की खेई,

यूपी को मिल सकता है फायदा



सफलता के लिए निवेश आकर्षित करने, आधुनिक उत्पादन तकनीक उपलब्ध कराने, कच्चे माल की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने और तैयार ईंधन के लिए बाजार विकसित करने पर विशेष ध्यान देना होगा।

धान की भूसी, गेहूं का भूसा और अधिशेष अनाज जैसे कच्चे माल का उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा इस्तेमाल किए गए खाद्य तेल और अपशिष्ट वसा भी इसके संभावित स्रोत हैं। इससे कृषि अवशेषों की मांग बढ़ेगी और किसानों को अतिरिक्त आय का अवसर मिल सकता है।

■ दुनिया में तेजी से बढ़ रहा बाजार : विमानन क्षेत्र में कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए एसएएफ को प्रमुख

उत्तर प्रदेश में कृषि अवशेषों की उपलब्धता, औद्योगिक बुनियादी ढांचे और सड़क, रेल व हवाई संपर्क का व्यापक नेटवर्क एसएएफ उद्योग के विकास में मददगार हो सकता है। नई नीति से हरित ऊर्जा, कृषि और उद्योग के बीच नई आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। हालांकि, नीति की

विकल्प माना जा रहा है। अमेरिका और यूरोप समेत कई देशों में इसके उत्पादन और इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए नीतियां, सम्मिश्रण लक्ष्य और वित्तीय प्रोत्साहन लागू किए जा रहे हैं। भारत में भी इस क्षेत्र में उत्पादन क्षमता विकसित करने और नई तकनीकों के व्यावसायिक उपयोग की संभावनाएं बढ़ रही हैं। हालांकि, एसएएफ की उत्पादन लागत पारंपरिक जेट ईंधन की तुलना में पांच गुना तक अधिक हो सकती है।